

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की मूल्य चेतना का तुलनात्मक विश्लेषण

अमृता भारती, Research Scholar, University Department of Psychology, Babasaheb Bhimrao Ambedkar Bihar University
Dr. Uma Nand Kumar, Research Scholar, University Department of Psychology Babasaheb Bhimrao Ambedkar Bihar University Muzaffarpur

Abstract

वर्तमान वैश्वीकरण के युग में तीव्र सामाजिक, सांस्कृतिक व तकनीकी परिवर्तनों ने विद्यार्थियों की मूल्य चेतना और दृष्टिकोण को गहरे स्तर पर प्रभावित किया है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों पर मूल्यपरक शिक्षा के प्रभाव एवं उनकी मूल्य चेतना का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन हेतु शून्य परिकल्पनाओं (Null Hypotheses) का निर्माण कर उनका आनुभविक परीक्षण किया गया। अध्ययन हेतु बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर जिले के विभिन्न महाविद्यालयों से यादृच्छिक-सह-स्तरीय प्रतिचयन विधि द्वारा 400 स्नातक विद्यार्थियों (200 शहरी एवं 200 ग्रामीण) का चयन किया गया। विद्यार्थियों की मूल्य चेतना के मापन हेतु डॉ. एस. पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित 'मूल्य अध्ययन मापनी' का प्रयोग किया गया। प्राप्त प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण माध्य, मानक विचलन एवं स्वतंत्र t-परीक्षण के माध्यम से किया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि शहरी विद्यार्थियों का मूल्य चेतना पर औसत प्राप्तांक (माध्य = 136.23, SD = 14.24) ग्रामीण विद्यार्थियों (माध्य = 124.04, SD = 8.49) की तुलना में सार्थक रूप से अधिक है ($t = 10.01, p < 0.01$)। परिणामस्वरूप, शून्य परिकल्पना (H_0) सांख्यिकीय आधार पर निरस्त (Reject) हो गई। यह निष्कर्ष दर्शाता है कि शहरी एवं ग्रामीण पृष्ठभूमि के छात्रों की मूल्य ग्रहणशीलता में वातावरणीय व संस्थागत संसाधनों के कारण उल्लेखनीय अंतर पाया जाता है।

Keywords

वैश्वीकरण, मूल्यपरक शिक्षा, मूल्य चेतना, शहरी विद्यार्थी, ग्रामीण विद्यार्थी
प्रस्तावना (Introduction)

वैश्वीकरण समकालीन युग की एक अत्यंत व्यापक और गतिशील प्रक्रिया है, जिसने दुनिया भर की भौगोलिक और सांस्कृतिक सीमाओं को समाप्त कर संपूर्ण विश्व को एक वैश्विक गांव (Global Village) के रूप में रूपांतरित कर दिया है। आर्थिक उदारीकरण, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की क्रांति तथा तीव्र औद्योगिकीकरण ने मानव जीवन के प्रत्येक आयाम को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है। शिक्षा के क्षेत्र में वैश्वीकरण ने जहाँ ज्ञान के नए स्रोतों, वैश्विक मंचों और तकनीकी दक्षताओं के द्वार खोले हैं, वहीं इसके नकारात्मक प्रभाव भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुए हैं। बाजारीकरण, उपभोक्तावादी संस्कृति और अत्यधिक भौतिकवादी दृष्टिकोण के विस्तार के कारण पारंपरिक जीवन मूल्यों, मानवीय संवेदनाओं और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना में तीव्र क्षरण देखने को मिला है।

भौतिकवादी चकाचौंध के इस संक्रमण काल में 'मूल्यपरक शिक्षा' की भूमिका अत्यंत अपरिहार्य हो चुकी है। मूल्यपरक शिक्षा केवल औपचारिक पाठ्यपुस्तकों का ज्ञान देना नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों में सत्य, अहिंसा, ईमानदारी, कठुणा, नागरिक कर्तव्य और सार्वभौमिक उत्तरदायित्व की चेतना को अंतर्निहित करने की एक निरंतर प्रक्रिया है। इसका परम उद्देश्य विद्यार्थियों को मात्र 'आर्थिक मानव' बनाना नहीं, बल्कि एक संतुलित, संवेदनशील, नैतिक एवं सामाजिक नागरिक के रूप में गढ़ना है।

विद्यार्थियों के मानसिक विकास, सामाजिक दृष्टिकोण और नैतिक चेतना के निर्माण में उनके भौगोलिक व सामाजिक परिवेश (आवासन स्थिति) का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान होता है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में शहरी और ग्रामीण जीवन शैलियों, शैक्षिक सुविधाओं और सामाजिक संरचनाओं में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है। शहरी परिवेश में सूचना प्रौद्योगिकी, इंटरनेट, विविध सह-शैक्षणिक अवसर, बहुसांस्कृतिक संवाद और परिष्कृत शैक्षणिक संस्थान सुलभ हैं। दूसरी ओर, ग्रामीण परिवेश प्रायः आधुनिक शैक्षणिक अवसररचना के अभाव और सीमित सूचनात्मक अवसरों की चुनौतियों से जूझता है। अतः वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में यह विश्लेषित करना अत्यधिक प्रासंगिक है कि क्या वास्तव में आवासन स्थिति का विद्यार्थियों की मूल्य चेतना पर कोई सार्थक प्रभाव पड़ता है अथवा नहीं।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

मूल्यपरक शिक्षा और विद्यार्थियों के समय विकास के संबंध पर पूर्व में अनेक मनोवैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों द्वारा शोध कार्य किए गए हैं:

* कुमार मदन (2025) ने अपने वैचारिक अध्ययन में यह रेखांकित किया कि समकालीन सामाजिक चुनौतियों और नैतिक दुविधाओं का समाधान करने में मूल्यपरक शिक्षा केंद्रीय भूमिका निभाती है, जो छात्रों में सामूहिक कल्याण के प्रति समर्पण विकसित करती है।

* कुमार एवं गुप्ता (2024) के अनुसार व्यक्तित्व निर्माण और नैतिक मूल्यों के संवर्धन हेतु सामान्य शैक्षणिक पाठ्यक्रम में मूल्यपरक शिक्षण का समावेशन अत्यंत अनिवार्य है।

* रेड्डी एवं स्वाथी (2024) ने स्पष्ट किया कि वर्तमान तकनीकी परिदृश्य में मूल्य आधारित शिक्षा युवाओं को नैतिक भटकाव से बचाकर जीवन की जटिलताओं का सामना करने में सक्षम बनाती है।

* मंडल (2025/2021) तथा मंडल एवं मजुमदार (2019) ने भारतीय परिप्रेक्ष्य में मूल्य आधारित शिक्षा की परंपरा और वर्तमान चुनौतियों का विश्लेषण करते हुए बताया कि आधुनिक शिक्षा तंत्र में नैतिक मूल्यों का क्षरण एक गंभीर संकट है, जिसका समाधान केवल सुनियोजित मूल्यपरक शिक्षण द्वारा ही संभव है।

* संदीप पाण्डेय (2019) ने स्पष्ट किया कि मूल्यपरक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल कक्षा में उपदेश देना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों की मानसिकता और सामाजिक व्यवहार में सकारात्मक भावनात्मक परिवर्तन लाना है।

* दश (2017) ने पाया कि सामुदायिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में सहभागिता से विद्यार्थियों में सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का तीव्र विकास होता है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)



* वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों पर मूल्यपरक शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।

* शहरी एवं ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों की मूल्य चेतना के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

* आवासन स्थिति (शहरी बनाम ग्रामीण) के आधार पर विद्यार्थियों के मूल्य अध्ययन प्राप्तियों के मध्य अंतर की सांख्यिकीय सार्थकता का परीक्षण करना।

शून्य परिकल्पनाएं (Null Hypotheses)

शोध अध्ययन को वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ स्वरूप प्रदान करने हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं (H_0) का निर्माण परीक्षण हेतु किया गया :

* H_{01} (मुख्य शून्य परिकल्पना): वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में शहरी और ग्रामीण पृष्ठभूमि के स्नातक विद्यार्थियों के मूल्य चेतना प्राप्तियों के मध्य कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

* H_{02} (लैंगिक उप-शून्य परिकल्पना - छात्र): स्नातक स्तर के शहरी छात्रों (Boys) एवं ग्रामीण छात्रों के मूल्य चेतना प्राप्तियों के मध्य कोई सांख्यिकीय सार्थक अंतर नहीं होगा।

* H_{03} (लैंगिक उप-शून्य परिकल्पना - छात्राएं): स्नातक स्तर की शहरी छात्राओं (Girls) एवं ग्रामीण छात्राओं के मूल्य चेतना प्राप्तियों के मध्य कोई सांख्यिकीय सार्थक अंतर नहीं होगा।

* H_{04} (अंतःक्रिया शून्य परिकल्पना): विद्यार्थियों के मूल्य चेतना स्तर पर आवासन स्थिति (शहरी/ग्रामीण) और लिंग (छात्र/छात्रा) के अंतःक्रिया प्रभाव (Interaction Effect) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

शोध प्रविधि (Methodology)

* प्रतिदर्श (Sample): प्रस्तुत अध्ययन हेतु बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर जिले में स्थित विभिन्न महाविद्यालयों से स्नातक स्तर के कुल 400 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया। प्रतिदर्श को भौगोलिक एवं लैंगिक आधार पर चार उपसमूहों में विभाजित किया गया :

* शहरी छात्र: 100

* शहरी छात्राएं : 100

* ग्रामीण छात्र: 100

* ग्रामीण छात्राएं : 100

(कुल शहरी प्रतिदर्श = 200, कुल ग्रामीण प्रतिदर्श = 200)।

* प्रतिचयन विधि (Sampling Technique): संपूर्ण प्रतिदर्श का चयन 'यादृच्छिक-सह-स्तरीय प्रतिचयन विधि' (Stratified Random Sampling Technique) द्वारा किया गया।

* शोध उपकरण (Research Tools):

* व्यक्तिगत आंकड़ा पत्रक (Personal Data Sheet): शोधार्थी द्वारा निर्मित इस पत्रक का उपयोग प्रतिदर्श के जनसांख्यिकीय चरों जैसे नाम, आयु, लिंग, पारिवारिक शिक्षा, आर्थिक आय एवं आवासीय स्थिति (शहरी/ग्रामीण) के संकलन हेतु किया गया।

* मूल्य अध्ययन मापनी (Study of Values Scale): विद्यार्थियों के मूल्य विकास व मूल्य चेतना के मापन हेतु डॉ. एस. पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत मापनी का उपयोग किया गया। यह मापनी कुल 6 प्रमुख मूल्य आयामों—सैद्धांतिक, आर्थिक, सौंदर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों का व्यापक मूल्यांकन करती है। इस मापनी की विश्वसनीयता .83 से .99 तथा वैधता .81 से .94 तक प्रमाणित है।

* प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया (Data Collection Procedure): शोधार्थी ने विद्यार्थियों से व्यक्तिगत संपर्क स्थापित कर दो सत्रों में परीक्षण सामग्री को प्रशासित किया। प्रथम सत्र में जनसांख्यिकीय पत्रक तथा द्वितीय सत्र में मूल्य अध्ययन मापनी को भरवाकर प्राप्तांक एकत्रित किए गए।

* सांख्यिकीय प्रविधि (Statistical Techniques): एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु केंद्रीय प्रवृत्ति के माप (माध्य), विचलन माप (मानक विचलन) एवं दो स्वतंत्र समूहों के मध्य अंतर की जांच हेतु स्वतंत्र t-परीक्षण (Independent Samples t-test) का प्रयोग किया गया।

परिणाम एवं विश्लेषण (Results and Discussion)

शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के मध्य मूल्य चेतना के स्तर की तुलना करने हेतु प्राप्त प्राप्तियों का सांख्यिकीय विश्लेषण तालिका 1 में प्रस्तुत किया गया है :

तालिका 1: शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के मूल्य चेतना प्राप्तियों के मध्य t-परीक्षण

। समूह (Group) । संख्या (N) । माध्य (M) । मानक विचलन (SD) । t-अनुपात (t) । सार्थकता स्तर (p) । परिकल्पना का निर्णय (H_0) ।

।---।---।---।---।---।

। शहरी प्रतिदर्श (Urban) । 200 । 136.23 । 14.24 । 10.01 । $p < 0.01$ (अत्यंत सार्थक) । H_{01} निरस्त (Rejected) ।

। ग्रामीण प्रतिदर्श (Rural) । 200 । 124.04 । 8.49 । । । ।

तालिका 1 के सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि शहरी विद्यार्थियों (N = 200) का मूल्य अध्ययन मापनी पर औसत प्राप्तांक (माध्य) 136.23 और मानक विचलन 14.24 है। इसके विपरीत, ग्रामीण विद्यार्थियों (N = 200) का औसत प्राप्तांक (माध्य) 124.04 और मानक विचलन 8.49 प्राप्त हुआ।

दोनों समूहों के माध्यों के अंतर की जांच करने पर प्राप्त t-मूल्य 10.01 है, जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर अत्यधिक सार्थक ($p < 0.01$) है।

शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण एवं निर्णय (Testing of Null Hypotheses):

* $H_{\{01\}}$ का परीक्षण : चूंकि प्राप्त t-मूल्य (10.01) क्रांतिक मान (2.58) से काफी अधिक है ($p < 0.01$), अतः मुख्य शून्य परिकल्पना ($H_{\{01\}}$) पूर्ण रूप से निरस्त (Rejected) की जाती है। इसके स्थान पर यह वैकल्पिक सत्य स्थापित होता है कि शहरी विद्यार्थियों की मूल्य चेतना ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में सांख्यिकीय रूप से सार्थक रूप से उच्च है।

* $H_{\{02\}}$ एवं $H_{\{03\}}$ का परीक्षण : शहरी व ग्रामीण उपसमूहों के प्राप्तांकों के विश्लेषण से यह सिद्ध होता है कि छात्रों एवं छात्राओं दोनों ही वर्गों में शहरी समूह के प्राप्तांक ग्रामीण समूह से सार्थक रूप से श्रेष्ठ रहे, जिससे संबंधित उप-शून्य परिकल्पनाएं भी निरस्त होती हैं।

परिणामों की विस्तृत व्याख्या (Discussion):

शून्य परिकल्पना के निरस्त होने और शहरी विद्यार्थियों में उच्चतर मूल्य चेतना पाए जाने के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं:

* शैक्षणिक अवसरचना और सह-शैक्षणिक अवसर : शहरी महाविद्यालयों में आधुनिक शिक्षण संसाधन, पुस्तकालय, सेमिनार, परिचर्चाएं और सामाजिक कार्यशालाएं नियमित रूप से आयोजित होती हैं, जो छात्रों के बौद्धिक व सामाजिक मूल्यों को परिष्कृत करती हैं।

* सूचना एवं तकनीकी पहुंच : शहरी छात्र डिजिटल माध्यमों और इंटरनेट के संपर्क में अधिक रहते हैं, जिससे उनमें समसामयिक वैश्विक मुद्दों, मानवाधिकारों, लोकतांत्रिक मूल्यों और पर्यावरणीय चेतना के प्रति अधिक संवेदनशीलता विकसित होती है।

* पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं सामाजिक संपर्क : शहरी परिवारों में उच्च शिक्षा और आर्थिक सम्पन्नता का स्तर अधिक होने के कारण विद्यार्थियों को नैतिक एवं मूल्यपरक विकास हेतु अधिक अनुकूल वातावरण प्राप्त होता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक मूल्यों की उपस्थिति के बावजूद आधुनिक वैश्वीकृत परिप्रेक्ष्य में आवश्यक नागरिक, सामाजिक एवं सैद्धांतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता के साधनों की सीमितता के कारण मूल्य चेतना का स्तर अपेक्षाकृत कम दर्ज किया गया।

निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत शोध अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में भौगोलिक एवं आवासीय स्थिति (शहरी बनाम ग्रामीण) विद्यार्थियों की मूल्य चेतना को सार्थक रूप से प्रभावित करती है। शून्य परिकल्पना का सांख्यिकीय निरस्तीकरण यह सिद्ध करता है कि शहरी परिवेश के छात्र-छात्राएं ग्रामीण परिवेश के छात्र-छात्राओं की तुलना में मूल्यपरक शिक्षा को अधिक प्रभावी रूप से आत्मसात करते हैं और उनकी समय मूल्य चेतना का स्तर अधिक सुदृढ़ है।

शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव (Educational Implications and Suggestions)

* ग्रामीण शिक्षण संस्थानों का सशक्तिकरण : ग्रामीण महाविद्यालयों में आधुनिक शैक्षणिक सुविधाओं, डिजिटल क्लासरूम और पुस्तकालयों का विस्तार किया जाना चाहिए ताकि वे शहरी संस्थानों के समकक्ष आ सकें।

* मूल्य-उन्मुख गतिविधियों का आयोजन : ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों में नैतिक, सामाजिक एवं नागरिक मूल्यों के विकास हेतु विशेष कार्यशालाओं, जनजागरूकता अभियानों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों को पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनाया जाना चाहिए।

* पाठ्यक्रम में सुधार : उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम को इस प्रकार पुनर्गठित किया जाए कि उसमें सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक जीवन मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व और आत्म-चेतना का संतुलित समावेश हो।

References

1. * Allport, G. W. (1937). Personality: A Psychological interpretation. New York: Henry Holt. * Dash, R. R. (2017). Quality of education in schools under Shiksha Vikash Samiti. Odisha, Ph.D thesis, Ravenshaw University. * Eysenck, H. J. (1952). The Scientific Study of Personality. London: Routledge & Kegan Paul. * Kulshrestha, S. P. (1998). Manual of directions for Revised & modified Hindi adaptation of Study of Values. Varanasi: Rupa Psychological Centre. * Kumar, Madan (2025). Values in Education: A conceptual study. International Journal for Multidisciplinary Research, 7(1), 1–5. * Kumar, Yogesh, & Gupta, Arati (2024). Personality development and character building in Education. Personality Development and Character Building, Ratlam, M.P.. * Mandal, Bimal (2025). Value-Based Education in India. Research Journal of Humanities and Social Sciences, 12(2), 120–121. * Mondal, G. C., & Majumder, P. (2019). Value based Education in India: Current issues & challenges. Educational Renovation in Contemporary Society. * Pandey, Sandeep (2019). मूल्यपरक शिक्षा : वर्तमान समय की आवश्यकता. International Journal of Applied Research, 100–102. * Reddy, G. L., & Swathi, N. (2024). Need of value-based education: A vital role in present scenario. International Education and Research Journal, 10(11), 116–118.